14/9/22

B.A. Part III Hindi Hons, Paper-8

डॉ० अरविन्द कुमार
हिंदी
एस०एन०एस०कॉ०,महोत०

रसखान (3) क्रमशः

रसखान के काव्य की विशेषता है कि इनमें अनुप्रास तथा यमक अलंकारों का प्रयोग चमत्कार पूर्ण हुआ है। वर्णन की स्वाभाविकता के साथ अनुप्रास के प्रभाव एवं यमक के चमत्कार ने इनके सवैयों को इतना सरस पूर्ण बना दिया है कि सवैयों का पर्याय नाम ही रसखान बन गया है। छंदों के आलोक में रसखान की ~~कवित्व~~ वास्तविक सिद्धि सवैया में ही हुई है।

मुसलमान होकर भी रसखान ने साम्प्रदायिक भेदभाव को अपने को पूरी तरह अलग रखा और हिन्दुओं के परमाराध्य श्री कृष्ण का गुणगायन, उनकी तन्मयता और ईमानदारी से किया कि बहुतेरे हिन्दू कवि भी भक्ति के क्षेत्र में उनकी समकक्षता नहीं कर सकते। उन्होंने प्रेम को भक्ति की चाशनी में घोलकर एक ऐसा रसायन प्रस्तुत किया है जिससे लोक हृदय उदात्त भाव भूमि पर प्रतिष्ठित हो जाता है। उस समय उसे कृष्ण के दिव्य रूप के अलावे और कुछ सूझता ही नहीं है।